विवाह, प्रेम और वैवाहिक जीवन

सप्तमेश वक्री हो तो————

विवाह और वैवाहिक जीवन के लिए सप्तमेश, सप्तम कारक शुक, सप्तम भाव में स्थित ग्रह तथा सप्तम भाव पर पड़ने वाली दृष्टि पर विचार किया जाता है। पुरूष की कुण्डली में पत्नी कारक शुक्र होता हैं जबकि स्त्री की कुण्डली में पति कारक बृहस्पति होता है। विवाह, प्रेम और वैवाहिक जीवन का कारक ग्रह दोनों की कुण्डलियों में शुक्र होता है। आगे आने वाले विडियो में हम सप्तम भाव सम्बन्धी विषयों पर विस्तार से चर्चा करेंगे। यहां हम इस विडियो में सप्तमेश के वक्री होने के बारे में विचार करेंगे। जन्म कुण्डली में सप्तमेश यदि वक्री होता है तो क्या फल होता है?

सप्तमेश वक्री होने पर जीवन साथी आपसे खुलकर बात नहीं करना चाहता है या चाहती है। कुछ छुपाने की प्रवृति होती है। वह खुलकर अपनी

भावनाओं को प्रकट नहीं कर पाता है। वह अपनी समस्याओं को प्रस्तुत नहीं कर पाता है। हो सकता है कि जीवन साथी काफी समय बाद कुछ स्पष्ट करे या सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करे। जीवन साथी को स्वास्थ्य हानि भी हो सकती है। सूर्य व चन्द्रमा वक्री नहीं होते हैं। इसलिए मकर लग्न में चन्द्रमा सप्तमेश होने के कारण तथा कुम्भ लग्न में सूर्य सप्तमेश होने के कारण इन लग्नों में वक्री सप्तमेश का कोई मतलब नहीं है। अन्य लग्नों के लिए हम वक्री मंगल आदि ग्रहों पर विचार करते हैं।

मंगल वृष व तुला लग्नों में सप्तमेश होता है। इन लग्नों में वक्री मंगल सप्तमेश होकर कहीं पर भी स्थित हो तो जातक का जीवन साथी महत्वाकांक्षी होता है तथा वह अपनी महत्वाकांक्षा को गुप्त रखता है। वह अपनी महत्वाकांक्षा को गुप्त रूप से पूर्ण करने की फिराक में रहता है।

शुक्र मेष व वृश्चिक लग्नों में सप्तमेश होता है। वक्री शुक्र यदि सप्तमेश होकर जन्म कुण्डली में कहीं

पर भी स्थित होता है तो जातक का जीवन साथी प्रेम व धन के मामले में अपनी इच्छानुसार निर्णय लेना चाहता है या चाहती है। वह फैशन और स्वयं के रहन–सहन के बारे में स्वतंत्र होता है। उसको समझना दूसरों के लिए मुश्किल होता हैं।

बुध धनु व मीन लग्नों में सप्तमेश होता है। वक्री बुध यदि सप्तमेश होकर जन्म कुण्डली में कहीं पर भी स्थित होता है तो जातक के जीवन साथी में विद्या के प्रति लगाव होता है। वह कुछ न कुछ सीखने में प्रवृत्त होता है। वह किसी विषय में गहराई से ज्ञान रखने वाला हो सकता है। उसके अन्दर किसी विषय का ज्ञान दबा हुआ हो सकता है जो अवसर मिलने पर उघड़ सकता है। ऐसे व्यक्ति विचारक होते हैं तथा कुछ न कुछ नया करने की सोचते हैं।

बृहस्पति मिथुन व कन्या लग्नों में सप्तमेश होता है। वक्री बृहस्पति यदि सप्तमेश होकर जन्म कुण्डली में कहीं पर भी स्थित होता है तो जातक के

अपने जीवन साथी से प्रायः धार्मिक व पौराणिक विषयों में चर्चा व विवाद होता रहता है। दोनों की मान्यताएं अलग–अलग हो सकती है।

शनि कर्क व सिंह लग्नों में सप्तमेश होता है। वक्री शनि यदि सप्तमेश होकर जन्म कुण्डली में कहीं पर भी स्थित होता है तो जातक एकांत में रहना पसंद करता है। वह अन्तर्मुखी होता है। वह कई बार हतोत्साहित होता है तथा हीन भावना से ग्रसित हो जाता है। स्वभाव से वह गम्भीर प्रकृति का होता है। जीवन साथी से मेलमिलाप रखना कम ही पसंद करता है। वह कई बार कई परेशानियों में उलझ जाता है।